विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 26 : अंक 1-24 : नई दिल्ली : 4-10 सितम्बर 2020

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण आदि ठाणा-५० हैदराबाद के शमशाबाद में स्थित महाश्रमण वाटिका के सुरम्य परिसर में सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। कोविद-१९ के संदर्भ में सावधानी की दृष्टि से प्रायः सभी कार्यक्रम वर्चुअल रूप में ही आयोजित किए जा रहे हैं। पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में गत सप्ताह वर्चुअल रूप में आयोजित पर्युषण महापर्वाधिराज के अष्टाह्निक कार्यक्रम श्रावक समाज के लिए आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुए। देश-विदेश से न केवल जैन तेरापंथ समाज, अपितु अन्य जैन समाज के श्रद्धालुओं की भी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हो रही हैं। श्रद्धालुओं ने इस महान पावन पर्व पर घर बैठे पूज्य सन्निधि का अनुभव किया।

सुधी पाठको!

सादर जय जिनेन्द्र।

चतुर्विध धर्मसंघ से सांवत्सरिक खमतखामणा।

कोविद-१९ के कारण किए गए लॉकडाउन के कारण जब भारत देश ही नहीं, मानों पूरी दुनिया ठप हो गई तो विज्ञप्ति का प्रकाशन और प्रेषण भी अवरुद्ध हो गया। इस कारण इसकी लोकप्रियता तथा पाठकों की इसके प्रति ललक और ज्यादा मुखर बनी। गत साधिक पांच महीनों की अवधि में 'विज्ञप्ति' प्राप्त न होने की शिकायतों से युक्त सुधी पाठकों के सैंकड़ों पत्रों और फोन कॉल्स से जहां एक ओर पाठकों की मांग को पूरा न कर पाने की कसक हमें भीतर से कचोटती थी, वहीं दूसरी ओर पाठकों की प्रतीक्षा यह मधुर अहसास भी कराती थी कि धर्मसंघ की इस सर्वाधिक विश्वसनीय पत्रिका का पाठकों के हृदय में आत्मीय स्थान है। मुख्यतया परम पूज्य आचार्यप्रवर और उनके आसपास के संवादों पर आधारित यह पत्रिका परमपूज्य गुरुदेव के मंगल आशीर्वाद से आज भी जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में सर्वाधिक लोकप्रिय बनी हुई है।

अनलॉक की प्रक्रिया कुछ आगे बढने के बाद बनी संभावनाओं के मद्देनजर विज्ञप्ति के लेखन, प्रकाशन और प्रेषण का प्रयास पुनः प्रारंभ किया जा रहा है। गत साधिक पांच माह में सोश्यल मीडिया के द्वारा पूज्य सन्निधि के समाचार श्रद्धालुओं को प्राप्त हुए ही होंगे, फिर भी विज्ञप्ति की बारीकी और मौलिकता सुधी पाठकों में जिज्ञासा के भाव जगाए हुए है। इसके साथ विज्ञप्ति इतिहास सुरक्षा का एक माध्यम है, इसलिए विज्ञप्ति के आगामी कुछ अंकों में पूज्यसन्निधि के नवीन समाचारों के साथ-साथ अतीत के अप्रकाशित समाचारों का भी 'स्मृतियां लॉकडाउन की' शीर्षक से प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है हमारा यह प्रयास पाठकों को इन तथ्यों से अवगत करा सकेगा कि इस विषम परिस्थिति में परमपूज्य आचार्यप्रवर ने किस प्रकार अपने आत्मबल, तपोबल, साहस और दूरदर्शिता से चतुर्विध धर्मसंघ को आध्यात्मिक संपोषण प्रदान किया और किस प्रकार अपने पूर्व घोषित चतुर्मास को करने के लिए अहिंसा यात्रा के विशाल कारवां का कुशल नेतृत्व करते हुए सकुशल हैदराबाद पधारे। परमाराध्य आचार्यप्रवर के तेजोमय तपोबल, फौलादी संकल्प, अदम्य साहस तथा अनुत्तर दूरदर्शिता के प्रति प्रणति अर्पित करते हुए विज्ञप्ति का पुनः प्रकाशन और 'स्मृतियां लॉकडाउन की' शृंखला के अन्तर्गत अतीत के अप्रकाशित समाचारों को प्रस्तुत किया जा रहा है--

स्मृतियां लॉकडाउन की

निर्मीयमाण मार्ग पर मार्गप्रदाता गुरुवर

१२ मार्च। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः बोरगांव से कुची के लिए प्रस्थान किया। निर्मीयमाण राजमार्ग जगह-जगह ऊबड़-खाबड़ और मिट्टी से युक्त बना हुआ था। वाहनों के आवागमन के कारण हवा में बार-बार मिट्टी का गुबार छा रहा था। आचार्यप्रवर इस प्रतिकूलता में भी समत्वभाव के साथ गतिमान थे। सिमेंटेड रूप में बन रहा मजबूत राजमार्ग संभवतः आने वाले कई दशकों तक राहगीरों के लिए सुविधादायक बन सकेगा।

पूज्यप्रवर कुची गांव के निकट पधारे तो गांव की सरपंच श्रीमती वैशाली पाटिल, उपसरपंच श्री विजय पाटिल, श्री संतोष पाटिल, हाइ स्कूल शिक्षण कमेटी के अध्यक्ष श्री धनंजय शिन्दे, प्राथमिकशाला के अध्यक्ष श्री कृष्ण देबड़बले, ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष श्री बाबूराव सूर्यवंशी, समन्वय समिति के अध्यक्ष श्री बाबूराव जाधव, पंचायत समिति के कई सदस्य आदि ग्राम्यजनों ने बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया। कई विद्यालयों के विद्यार्थी और शिक्षक भी पूज्यप्रवर के स्वागत में सोत्साह उपस्थित थे। सबकी उपस्थिति ने विशाल जुलूस का रूप ले लिया। विद्यार्थियों द्वारा बुलन्द स्वर में उच्चरित जयघोष वातावरण को गुंजायमान बनाए हुए थे। आचार्यप्रवर १० कि.मी. का विहार सम्पन्न कर कुची में स्थित जिल्हा परिषद शाला में पधार। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में सत्यनिष्ठा और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा प्रदान की।

आचार्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आदमी जिस देश में रहे, उसका नुकसान उसके द्वारा नहीं होना चाहिए। तोड़-फोड़, आगजनी आदि नहीं होनी चाहिए। व्यक्ति के लिए यह चिन्तनीय है कि राष्ट्र की सम्पति का नुकसान उसके लिए उचित है या नहीं, अपनी मांगों को मनवाने का कोई अहिंसक तरीका नहीं हो सकता है क्या? हिंसा में जाकर और अपने राष्ट्र की सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाकर अपनी मांगों को मनवाने का प्रयास कितना उचित है, इस पर विचार होना चाहिए। लोकतंत्र में विचार स्वातंत्र्य हो सकता है, किन्तु राष्ट्र को नुकसान पहुंचे, ऐसे काम से बचना नहीं चाहिए क्या?'

पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में उपस्थित गांव की सरपंच श्रीमती वैशाली पाटिल, उपसरपंच श्री विजय पाटिल आदि को साधुचर्या, अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान करते हुए संकल्पत्रयी ग्रहण कराई।

कुची के उपसरपंच श्री विजय पाटिल ने कहा--'आज हमारे गांव में आचार्यश्री महाश्रमणजी अहिंसा यात्रा करते हुए पधारे हैं। मैं अपने गांव की ओर से उनका स्वागत करता हूं। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के उद्देश्य के साथ चलने वाली यह यात्रा सफल हो, सम्पूर्ण मानव जाति के लिए कल्याणकारी हो। गुरुजी! आप हमें ऐसा आशीर्वाद दें कि हम आपके उपदेशों को अपने जीवन में उतार सकें।'

हाइ स्कूल शिक्षण कमेटी के अध्यक्ष श्री धनंजय शिन्दे कहा--'परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी आज हमारे गांव में आए हैं। यह हमारा सौभाग्य है। आचार्यश्री की यह यात्रा सफल हो, यही मंगलकामना करता हूं।'

चरणरज पाकर हर्षाए नागजवासी

१३ मार्च। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कुची से नागज के लिए प्रस्थान किया। आज का विहार लंबा था और सूर्य का बाल्यरूप विहार के दौरान उसकी संभावित प्रखरता को दर्शा रहा था, किन्तु हवा के वेग और बादल की टुकड़ियों ने उसकी तेजस्विता पर अंकुश बनाए रखा। इस कारण कुछ अनुकूलता की स्थिति बनी रही। पूज्यप्रवर ने मार्ग में सांगली जिले से सोलापुर जिले में पावन प्रवेश किया। यों तो

अंगूर उत्पादन का क्षेत्र पीछे रह गया, किन्तु इस क्षेत्र में कहीं-कहीं अंगूर के बागान दिखाई दे रहे थे। अंगूर को किसमिस के रूप में बदलने की प्रक्रिया इस क्षेत्र में भी संपादित की जा रही थी। निर्माण प्रक्रिया सम्पन्न होने के पश्चात् किसमिसों के ढेर धूप में सुखाए हुए दिख रहे थे। अंगूर के बागानों का स्थान मानों इस क्षेत्र में अनार के बागानों ने ले लिया है। बागानों में दृष्टिगोचर हो रहे अनार राहगीरों का ध्यान अपनी ओर खींच रहे थे। कुछ दूरी पर दिखाई दे रहे पहाड़ों पर पवनचक्कियां भी बड़ी संख्या में दृष्टिगोचर हो रही थीं।

आचार्यप्रवर के स्वागत में नागजवासी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। स्थानीय सरपंच श्रीमती नंदिनी देसाई, पूर्व उपसरपंच श्री सिद्धेश्वर स्वामी, पूर्व चेयरमेन श्री सुधीर पाटिल, श्री पांडुरंग माने, सिद्धेश्वर माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री राजाराम देसाई, आदर्श विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री संजयकुमार सांबरे, आदर्श विद्यालय सोसायटी के अध्यक्ष श्री ओघम्बर पाटिल, समन्वय समिति के अध्यक्ष श्री मनमथ स्वामी आदि ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया। मार्ग के दोनों ओर पंक्तिबद्ध खड़े स्थानीय विद्यालयों के विद्यार्थियों ने आचार्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर १३.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन कर नागज में स्थित श्री सिद्धेश्वर उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में ज्ञान और आचार की ज्योति से जीवन को ज्योतित बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम में सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा अन्य ग्रामवासियों को उत्प्रेरित कर आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा की प्रतिज्ञाएं स्वीकार कराईं।

स्थानीय सरपंच श्रीमती नन्दिनी देसाई ने कहा--'मैं मेरे गांव की ओर से आचार्यश्री को प्रणाम करती हूं और आपका स्वागत करती हूं। आचार्यश्री ने अभी हमें और विद्यार्थियों को जो प्रेरणा दी है, प्रतिज्ञाएं करवाई हैं, उसके लिए मैं आपकी आभारी हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि आचार्यश्री की यह यात्रा पूर्णरूपेण सफल हो।'

मुख्य अध्यापक राजाराम देसाई ने कहा--'आज हमारे इस विद्यालय प्रांगण में अहिंसा यात्रा का आगमन हुआ है। हमारे गांववासियों और छात्र-छात्राओं ने इस पदयात्रा का सहर्ष स्वागत किया। मैं आज के दिन को अपने भाग्य का दिन समझता हूं कि मुझे आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन का दुर्लभ अवसर मिला।'

स्थानीय भजन मंडली द्वारा गीत को प्रस्तुति दी गई।

कोरोना वायरस की समस्या विश्व के कई देशो में फैल चुकी है। कई संक्रमित विदेशियों के कारण यह अब भारत में भी फैलने लगी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पूरे विश्व में अब तक १,४५,४१६ लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हो चुके हैं तथा उनमें ५४२८ कालकवलित भी हो चुके हैं। दुनिया के किसी देश में अब तक इस वायरस की दवा भी नहीं बन पाई है। इससे संक्रमित होने के बाद वृद्ध लोगों व हृदय, फैंफड़ों, किडनी, शुगर आदि की बीमारी से ग्रस्त व्यक्तियों और धूम्रपान करने वाले लोगों के स्वस्थ होने की संभावना कम ही रहती है। इससे मरने वालों की संख्या निरंतर बढ़ती ही जा रही है। बताया गया कि यह वायरस किसी संक्रमित की छींक, खांसी आदि के कारण मुंह व नाक से निकले सूक्ष्मकणों के किसी दूसरे व्यक्ति के भीतर मुंह, नाक व आंख के जरिए प्रविष्ट होने से फैलता है।

भारत में ३० जनवरी २०२० को पहला व्यक्ति इससे संक्रमित पाया गया था। अन्य देशों के कुछ संक्रमितों के आने व उनसे संक्रमण फैलने से यह संख्या बढ़कर अब ८१ हो गई है। महाराष्ट्र में अब तक १९ व्यक्ति इस संक्रमण के शिकार हो चुके हैं। इस सारे परिप्रेक्ष्य में आज दोपहर में पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में साधु-साध्वियों की संगोष्ठी आयोजित हुई। इस संगोष्ठी में आचार्यप्रवर ने अभय और समतालीन रहने की व यथोचित सावधानी रखने की भी प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने चतुर्विध धर्मसंघ के लिए आध्यात्मिक संपोषण के रूप में मंगल संदेश भी प्रदान किया। वह पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित है।

आचार्यप्रवर ने गत ११ फरवरी से कोरोना वायरस के संदर्भ में व चारित्रात्माओं की स्वास्थ्य सुरक्षा एवं सभी मनुष्यों की चित्त समाधि की दृष्टि से प्रतिदिन ग्यारह बार 'चइत्ता भारहं वासं.....' श्लोक का जप प्रारंभ किया था। संगोष्ठी में उसे अब प्रतिदिन इक्कीस बार करने का भी निर्णय हुआ। आचार्यप्रवर ने जप अनुष्ठान के साथ नमस्कारसहिता, पौरसी (प्रहर) आदि तप को भी सुझाव के रूप में निर्दिष्ट किया।

संगोष्ठी में संतों व गृहस्थों द्वारा किए जाने वाले पूज्यप्रवर के चरणस्पर्श के क्रम को यथावत बरकरार रखने अथवा न रखने के विषय में भी चिंतन हुआ। आखिर निर्णय यही हुआ कि फिलहाल चरणस्पर्श के क्रम को बंद न किया जाए।

दुर्बलता की संतानें हैं क्रोध और भय

१४ मार्च। परम पूज्य आचार्यप्रवर आज प्रातः नागज से जुनोनी के लिए प्रस्थित हुए। वातावरण में व्याप्त हल्की ठंड और यदा-कदा हवा के तेज प्रवाह से उड़ने वाली मिट्टी फाल्गुन माह में राजस्थान में होने का अहसास करा रही थीं। सूर्य अपने ऊर्ध्वारोहण के साथ वातावरण की शीतलता को लीलता जा रहा था, किन्तु आसमान मे विहरण कर रहे बादल उसकी तेजस्विता को भी नियंत्रित बनाए हुए थे। इस कारण मौसम समशीतोषण-सा बना रहा। हवा का वेग आसपास की पहाड़ियों पर बड़ी संख्या में दिखाई दे रही पवन चक्कियों को यहां लगाने के कारण को दर्शा रहा था। निर्मीयमाण सड़क यत्र-तत्र उबड़-खाबड़ रूप में थी। पहाड़ी क्षेत्र में होने के कारण मार्ग का आरोह-अवरोह स्वाभाविक था, किन्तु आचार्यप्रवर का समत्वभाव अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों से अप्रभावित था।

मार्ग के आसपास अनार के बगीचे ही बगीचे दिखाई दे रहे थे। उन बगीचों में पौधों पर लटके अनार परिपक्वता की ओर गतिमान थे। कई खेतों में 'टपक पद्धति' (ड्रिप इरिगेशन सिस्टम) से सिंचाई की जा रही थी। इस पद्धति के द्वारा खेतों में लगे पाइप्स से प्रत्येक पौधों के पास बूंद-बूंद पानी रिस रहा था, जो कि सिंचाई की आवश्यकता की पूर्ति के लिए पर्याप्त था। बताया गया कि इस पद्धति से कम पानी से भी अच्छी पैदावार हो जाती है और पानी का अपव्यय भी नहीं होता।

आचार्यप्रवर के स्वागत में जुनोनीवासी बड़ी संख्या मे पलक पांवड़े बिछाए खड़े थे। पूज्यप्रवर उनके निकट पधारे तो स्थानीय संरपच श्री संजय कांबले आदि ग्राम्यजनों ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। गांव के कुछ विद्यालयों के सैंकड़ो छात्र-छात्राएं भी आचार्यप्रवर के स्वागत में सोत्साह उपस्थित थे। विद्यार्थियों की लंबी कतार और ग्रामवासियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति से जुलूस का रूप बन गया। 'वंदे गुरुवरम्', 'जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण' के घोष से गांव की गलियां गुंजायमान हो उठीं। पूज्यप्रवर लगभग १३ कि. मी. का विहार कर जुनोनी में स्थित जुनोनी विद्यालय में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने सम्मुख मराठी भाषा में अंकित सूक्त 'क्रोध अणि भय ही दुर्बलते ची अपत्ये आहेत' के आधार पर अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में अनेक कमजोरियां हो सकती हैं। उनमें दो हैं-गुस्सा और भय। आदमी कभी गुस्से में चला जाता है, कभी भयभीत हो जाता है। गुस्सा और भय दुबर्लता की संतानें हैं। दुबर्लता है तभी गुस्सा और भय व्यक्ति को आक्रान्त करते हैं। गुस्सा मनुष्यों का शत्रु है। आदमी प्रतिकूल स्थिति में गुस्सा न करे, यह वांछनीय है।

गुस्से को असफल बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। ज्यों ही गुस्सा आने लगे, व्यक्ति को जागरूक हो जाना चाहिए और क्रोधवश गाली देने, हाथ उठाने आदि से बचना चाहिए। क्रोधवश भोजन छोड़ देना, गाली देना, हाथ उठाना आदि गुस्से को सफल बनाने वाले कार्य हैं।

आदमी का सबके साथ मैत्रीभाव रहे। मैत्रीभाव प्रखर रहता है तो क्रोध अनस्तित्व में जा सकता है अथवा उपशांत हो सकता है। भय भी एक कमजोरी है। जो व्यक्ति पूर्णतया अभय होता है, वह बहुत सुखी हो सकता है।'

आचार्यप्रवर ने समुपस्थित सैंकड़ों विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए उन्हें ज्ञान के साथ सत्संस्कारों को अर्जित करने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर से उत्प्रेरित होकर विद्यार्थियों, शिक्षकों व बड़ी संख्या में उपस्थित अन्य ग्राम्यजनों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

स्थानीय सरपंच श्री संजय कांबले ने कहा--'आज हमारे गांव को अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण ने अपने चरणों के स्पर्श से पावन किया है। यह हमारे गांव के लिए अत्यन्त भाग्य की बात है। मैं सभी गांववासियों की ओर से उनका स्वागत करता हूं, अभिनंदन करता हूं। गुरुजी! आप अहिंसा यात्रा के दौरान मानव कल्याण का महान कार्य कर रहे हैं। आप अपना आशीर्वाद हम पर हमेशा बनाए रखें, यही विनम्र विनती करता हूं।'

श्री अरविन्द पाटिल, श्री नितिन भोंसले तथा राजाराम धनखड़े ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

सायंकाल करीब ४.३० बजे परम पूज्य आचार्यप्रवर जुनोनी से हातीद की ओर प्रस्थित हुए। सूर्य तेजस्विता लिए हुए था, किन्तु पीठ की ओर स्थित होने के कारण उसकी तीव्रता का अहसास कम ही हो रहा था। मार्ग के आसपास चीकू के बगीचे अच्छी मात्रा में थे। उन बगीचों में पेड़ों पर बड़े-बड़े आकार के चीकू दृष्टिगोचर हो रहे थे। लगभग ७ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर हातीद में स्थित श्री राम विद्यालय व कनिष्ठ महाविद्यालय में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। स्थानीय सरपंच श्री पिन्टु माली ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

समाधान बनें विद्यार्थी

१५ मार्च। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः हातीद से वाटंबरे के लिए प्रस्थित हुए। सूर्योदय के कुछ ही समय पश्चात् वातावरण ऊष्मायुक्त बन गया। विहार मार्ग के सम्मुखीन बने हुए सूर्य की धूप तीखापन लिए हुए मानों शरीर को बींध रही थी। इसके साथ निर्मीयमाण पथ की विषमता और वाहनों के आवागमन के कारण उड़ रही मिट्टी प्रतिकूलता की स्थिति उत्पन किए हुए थीं, किन्तु आचार्यप्रवर उससे प्रभावित हुए बिना निरंतर गंतव्य की ओर गतिमान थे।

मार्गवर्ती पाचे गांव के सरपंच श्री मिशाल रामचंद्र आदि ने अपने गांव में आचार्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्यप्रवर वाटंबरे गांव में पधारे तो स्थानीय सरपंच श्रीमती इंदु सावता माली, उपसरपंच श्री रेखा विजय पाटिल, पूर्व सरपंच श्री अप्पा साहब पंवार, श्री नामदेव गेजगे, पूर्व उपसरपंच श्री शुबराव मचीन्द्र पंवार, समन्वय समिति के अध्यक्ष श्री प्रतीक दादा पंवार, विद्यालय सोसायटी के संस्थापक अध्यक्ष श्री दामोदर पंवार, वर्तमान अध्यक्ष श्री अनिल लक्ष्मण पंवार, प्रधानाचार्य श्रीमती चंदन शिवे आदि बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर की भावपूर्ण अगवानी की। हाइ स्कूल के विद्यार्थी और अन्य ग्रामीण पूज्यप्रवर के आगे अथवा पीछे जुलूस के रूप में चलते हुए प्रवास स्थल तक पहुंचे। पूज्यप्रवर करीब १४.२ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर वाटंबरे में स्थित श्री छत्रपति शिवाजी हाइ स्कूल व ज्युनियर कॉलेज में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में सत्संगति के महत्त्व को विवेचित किया। तदुपरान्त पूज्यप्रवर ने समुपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा--'विद्यार्थियों में सत्पुरुषार्थ की भावना रहनी चाहिए। अच्छा पुरुषार्थ होता है तो उसका फल भी अच्छा मिल सकता है। विद्यार्थियों को आलस्य में नहीं रहना चाहिए। उनमें ईमानदारी, संयम, नशामुक्ति आदि अच्छे संस्कार रहने चाहिए। उनके जीवन में ज्ञान और अच्छे संस्कारों का निधान (खजाना) भी हो तो वे अच्छे इंसान बन सकते हैं और परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए समाधान बन सकते हैं। जिस विद्यार्थी के संस्कार अच्छे नहीं होते, वह स्वयं के लिए और परिवार, समाज व राष्ट्र के लिए भी समस्या बन सकता है। विद्यार्थी समस्या नहीं, समाधान बनें,

अच्छे इंसान बनें।'

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामवासियों को आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान कर संकल्पत्रयी स्वीकार कराई। ग्राम पंचायत की ओर से श्री विजय पंवार और जलदूत श्री मधुकर पंवार ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती चंदन शिवे ने कहा--'आज हम अभिभूत हैं कि अहिंसा यात्रा हमारे प्रांगण में आई है। इस यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी और उनकी धवल सेना का मैं सम्पूर्ण विद्यालय परिवार की ओर से स्वागत करती हूं, अभिनंदन करती हूं। आचार्यश्री का प्रवचन हम सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत लाभदायी है। मैं विद्यालय की ओर से आपका आभार व्यक्त करती हूं।'

सायंकाल करीब पांच बजे आचार्यप्रवर वाटंबरे से कमलापुर की ओर प्रस्थित हुए। बाटंबरे गांव में कुछ लोग मार्ग के समीप घट्टी के निर्माण का कार्य करते हुए दिखाई दे रहे थे। बताया गया कि यहां की घट्टी, खरल आदि प्रसिद्ध हैं। स्थानीय लोग इन्हें अपने हाथों से तैयार करते हैं। बाटंबरे के ग्रामीण विहार के दौरान पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। ढ़लते हुए सूर्य की धूप पीठ की ओर थी, इसलिए उसका आतप मंद रूप में ही अनुभूत हो रहा था। मान नदी पर बने पुल से पूज्यप्रवर नदी के इस पार पधारे। यह नदी प्रायः सूखी अवस्था में ही थी। पूज्यप्रवर लगभग ५.५ कि.मी. का विहार कर कमलापुर में पधारे। सिंहगढ़ इंस्ट्रिटयुट में आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ।

समाज की जरूरत हैं अहिंसा यात्रा के तीनों सूत्र

१६ मार्च। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः कमलापुर से बाढ़ेगांव की ओर प्रस्थान किया। सूर्य मानों अपने बाल्यकाल से आतप बरसाने लग गया। राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर १६६ भविष्य में राहगीरों के लिए संभावित रूप में जितना सुविधाजनक बन सकेगा, उसकी वर्तमान निर्मीयमाण स्थिति उतनी ही कष्टदायक है, किन्तु आचार्यप्रवर उसकी परवाह किए बिना अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जा रहे थे। मार्ग के आसपास भी कहीं-कहीं तो खेत दिखाई दे रहे थे, शेष तो सूखे मैदान दृष्टिगोचर हो रहे थे।

आचार्यप्रवर बाढ़ेगांव में पधारे तो बाढ़ेगांव के सरपंच श्री नंदकुमार शिवजी दिघे, उपसरपंच श्री अनिल दिघे, समन्वय समिति के अध्यक्ष श्री अशोक सिनगरे, विद्यालय समिति के अध्यक्ष श्री सुरेश पाटिल, देशमुख विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अनंत कुलकर्णी आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। मार्ग के दोनों ओर कतारबद्ध और करबद्ध खड़े विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यप्रवर १३ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर बाढ़ेगांव में स्थित राष्ट्रसंत परम पूज्य उदयसिंहजी देशमुख प्रशाला व कनिष्ठ महाविद्यालय में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में अहिंसा को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की।

विद्यालय के संस्थापक तथा पूर्व विधायक श्री दीपक अब्बा साहब सांलुके पाटिल ने कहा--'हमारा यह सौभाग्य है कि आज हमारे इस प्रांगण में महान संत परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का आगमन हुआ है। मैं और भी सौभाग्यशाली हूं कि मेरे तीन विद्यालयों में आचार्यश्री का पदार्पण और प्रवास हुआ। आचार्यश्री ने सैंतालीस हजार से भी ज्यादा किलोमीटर पैदल चलकर दुनिया भर में शांति का संदेश दिया है। अहिंसा यात्रा के तीनों सूत्रों की समाज को बहुत जरूरत है। आचार्यश्री ने अपना पूरा जीवन हम लोगों के कल्याण के लिए समर्पित कर रखा है तो हमारा भी कर्त्तव्य है कि हम आचार्यश्री के संदेश को अपने जीवन में उतारें। मेरा विश्वास है कि आचार्यश्री की इस यात्रा से सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति--ये तीनों सूत्र पूरे संसार में छा जाएंगे।'

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अनंत कुलकर्णी ने कहा--'आज बाढ़ेगांव में आचार्यश्री महाश्रमणजी के रूप

में महान संत पधारे हैं। आपके पावन स्पर्श से हमारा गांव और हमारा विद्यालय पावन हो गया। हमारा बहुत बड़ा भाग्य है कि हमें आचार्यश्री के दर्शन का मौका मिला। अहिंसा यात्रा सफल हो, यही मंगलकामना करता हूं।'

विद्यालय संस्था के सचिव श्री सुभाष लऊलकर ने कहा--'आज हमारे बाढ़ेगांव और हमारे विद्यालय में महापुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी का पावन पदस्पर्श हुआ है। हमारे इस गांव और इस विद्यालय का कण-कण आपके पदस्पर्श और आपके ज्ञानामृत से प्रभावित हुआ है। यह प्रभाव हमें जीवनभर सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की प्रेरणा देता रहेगा। तीन देशों में हजारों किलोमीटर पैदल चलकर अहिंसा का संदेश फैलाने का जो कार्य आचार्यश्री ने किया है, उसकी कोई दूसरी मिशाल नहीं है। आपने हमें जो शपथ दिलाई है, उसका हम जीवनभर पालन करेगें, ऐसा वचन देते हैं।'

समुपस्थित गणमान्य लोगों, अन्य ग्रामवासियों तथा विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए। ग्राम पंचायत की ओर से श्री धनंजय पंवार ने अपनी अभिव्यक्ति के द्वारा आचार्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

नियमों में है दृढताई

साधु-साध्वियों का प्रवास एक इमारत में होने के कारण साधु अथवा साध्वियों दोनों में से किसी एक का सायंकालीन विहार करना अपेक्षित था। आचार्यप्रवर ने स्वयं और मुनिवृंद का विहार तय कर दिया। ज्ञातव्य है कि २१ अप्रेल २०१६ को आचार्यप्रवर ने अनिश्चितकाल के लिए यह निर्णय किया था कि जब कभी एक इमारत में प्रवास होने के कारण मुनिवृंद और साध्वीवृंद में से किसी एक का विहार करना आवश्यक हो तो सामान्यतया आचार्यप्रवर और संतों का विहार हो।

आज प्रातः साध्वीप्रमुखाजी ने निवेदन किया कि आचार्यप्रवर यह नियम न रखवाएं कि अपेक्षा हो तो आचार्यप्रवर और संतों को ही विहार करना। जब भी अपेक्षा होगी, हम साध्वियां विहार कर सकती हैं। आचार्यप्रवर इसके लिए श्रम न कराएं। साध्वीप्रमुखाजी के निवेदन पर आचार्यप्रवर ने चिंतनपूर्वक नया निर्णय किया-'यदि एक बिल्डिंग में साधु एवं साध्वियों दोनों के न रहने के नियम को पालने के लिए विहार करना साधु समुदाय अथवा साध्वी समुदाय दोनों में से एक के लिए अनिवार्य हो जाए तो वैसी स्थिति में यह कोई नियम नहीं है कि आचार्यप्रवर व संत ही विहार करें। यदि स्थान, उत्सर्ग व्यवस्था व तत्सदृश उपलब्धता हो रही हो और अन्य कोई विशेष कठिनाई न हो रही हो तो विहार करने में प्राथमिकता साध्वी समुदाय की रहनी चाहिए।' किन्तु साथ में यह भी फरमाया कि इस निर्णय को १७ मार्च २०२० के प्रातः ७ बजे से लागू माना जाए।

चूंकि यह निर्णय आगामी कल से लागू होना था, इसलिए आज शाम को आचार्यप्रवर और संतों का निर्धारित विहार यथावत रखा गया। पूज्यप्रवर ने करीब ५.४४ बजे बाढ़ेगांव से दिघेवाड़ी के लिए प्रस्थान किया। इस अवसर पर साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां भी उपस्थिति थीं। साध्वियों ने दो नवरचित पद्यों का संगान किया--

नियमों में संशोधन कर, पिछले नियमों में बंधकर।
करते विहार प्रभुवर, नियमों में है दृढ़ताई।।

साध्वीप्रमुखा की अर्जी, करवाई प्रभु ने मरजी।
सत्रह के सात बजे से लागू हो महर कराई।।
करते विहार प्रभुवर नियमों में है दृढताई।।

साध्वीवृंद द्वारा प्रस्तुत इन पद्यों में उनके कृतज्ञभाव अभिव्यक्त हो रहे थे। पूज्यप्रवर करीब २.२ कि. मी. का विहार कर दिघेवाड़ी में स्थित जिला परिषद् प्राथमिक शाला में पधारे।आज का रात्रिकालीन प्रवास

यहीं हुआ। रात्रि में हल्के तूफान के बाद हल्की वर्षा हुई। हालांकि पूज्यप्रवर का प्रवास केल्हू की छत वाले कमरे में हो रहा था, किन्तु तूफान व वर्षा का प्रभाव उस कक्ष में प्रायः नहीं था।

१७ मार्च। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः दिघेवाड़ी से आंघलगांव की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग के आसपास खेत कम और सूखा भूभाग ज्यादा नजर आ रहा था। धूप की तीव्रता और मार्ग की निर्मीयमाणता इस सूखे प्रदेश में और भी प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न किए हुए थी, किन्तु ज्योतिचरण गुरुदेव अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए मंजिल की ओर अनवरत अग्रसर थे। उनके चरणों की गति धीमी हुई तो मार्ग में दिखाई दे रही छोटी-छोटी चींटियों के कारण। जो कार्य प्रतिकूलता नहीं कर पाई, वह उन निरीह जीवों के प्रति आचार्यप्रवर की दया ने करवा दिया। आचार्यप्रवर उनकी हिंसा से बचने के लिए सावधानीपूर्वक और सबको सावधान करते हुए आगे पधारे।

करीब १०.८ कि.मी. का विहार परिसम्पन कर पूज्यप्रवर आंघल गांव में पधारे। बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामवासियों ने पूज्यप्रवर का सश्रद्धा स्वागत किया। कै. दत्ताजीराव भाकरे शाला व कनिष्ठ महाविद्यालय में आज का प्रवास रहा। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री महादेव गोडचे आदि ने पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में ईमानदारी को जीवनगत बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

विद्यालय की अध्यापिका श्रीमती प्रवीण बागवान ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

क्रमशः बदलती हुई परिस्थितियों के संदर्भ में चिंतन एवं निर्णय

भारत में कोरोना वायरस से संक्रमितों की संख्या बढ़कर १३९ हो गई हैं। उसमें भी सर्वाधिक संख्या महाराष्ट्र राज्य में ३९ है। भारत सरकार व महाराष्ट्र सरकार ने इस संदर्भ में कई निर्देश जारी किए हैं। इस स्थिति में अहिंसा यात्रा को किस रूप में जारी रखना, इस दृष्टि से गत रात्रि में महासभा के पूर्व अध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया व सोलापुर के कार्यकर्ता सोलापुर जिले के कलेक्टर श्री मिलिन्द संबलकर से मिले। उन्हें यात्रा के विषय में अवगति दी। वे यात्रा के विषय में पहले से ही अवगत थे। वार्तालाप के निष्कर्ष के रूप में उन्होंने यही कहा-'गुरुजी के पास ज्यादा लोगों को न आने दें, बाकी लोग भी परस्पर कुछ दूरी बनाए रखें, भीड़ न होने दें तथा सावधानी रखें। चूंकि गुरुजी पैदल चलते हैं, इसलिए आप यात्रा को यथावत जारी रख सकते हैं।'

आज दोपहर में कोरोना वायरस के संदर्भ में पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि मे बहुश्रुत परिषद् व अग्रणी साधु-साध्वियों की गोष्ठी आयोजित हुई। उसमें चर्चा के उपरांत आचार्यप्रवर ने कई निर्णय किए, यथा-

१. अनिश्चितकाल तक आचार्यप्रवर के चरणस्पर्श संतों व गृहस्थों के लिए बंद किए जा रहे हैं।

२. सर्दी, खांसी से ग्रस्त चारित्रात्माएं प्रतिक्रमण, अर्हतवंदना आदि सामूहिक उपक्रमों में संभागी न बनें अथवा चार-पांच फुट दूर बैठें।

३. कोरोना वायरस के संदर्भ में संतों में मुनि कुमारश्रमणजी तथा साध्वियों में साध्वी शशिप्रभाजी को परामर्शक/सचेतक नियुक्त किया जा रहा है।

४. मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में गणमान्यों के सिवाय ग्रामीणों व विद्यार्थियों को आहूत न किया जाए।

५. बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं को किस सीमा तक रोकना, यह तेरापंथी महासभा का दायित्व है।

६. प्रशासन जिस कार्य के लिए मना कर दे, उस कार्य को न किया जाए।

इस प्रकार अनेक निर्णयों के साथ गोष्ठी सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी के निर्णय के अनुसार तेरापंथी महासभा ने श्रद्धालुओं के संघबद्ध रूप में गुरुकुलवास में पहुंचने का निषेध कर दिया और इसकी जानकारी सोलापुर और औरंगाबाद के कार्यकर्ताओं को दे दी।

मौसम ने ली करवट

१८ मार्च। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः आंघलगांव से मंगलबेढा की ओर प्रस्थित हुए। गर्मी क्रमशः बढ़ती जा रही है। रात्रि में भी अब ठंड का स्थान गर्मी लेती जा रही है। ग्राम्यजनों में भी कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए जागरूकता दिखाई दे रही है। कई ग्राम्यजन मुंह पर मास्क लगाए हुए या मुंह को रुमाल आदि वस्त्र से ढके हुए दिखाई दिए। मंगलबेढा के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यप्रवर करीब १३.२ कि.मी का विहार कर मंगलबेढा में स्थित श्री संत दामाजी महाविद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री एन.वी. पंवार आदि ने पूज्यप्रवर का सविनय स्वागत किया।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में ज्ञान और ज्ञानी के महत्त्व को विवेचित किया।

विद्यालय के डायरेक्टर श्री राहुल शाह ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

गत रात्रि में रही गर्मी के मद्देनजर आज पूज्यप्रवर के शयन के लिए बरामदे का स्थान निर्धारित किया गया, किन्तु रात्रि अर्हतवंदना के उपरांत वेग के साथ हवा बहने लगी और कुछ समय तक अंधड़ की स्थिति रही। उसके पश्चात् बादल गरजने लगे, बिजलियां कड़कने लगीं और कुछ ही समय में वर्षा प्रारंभ हो गई। यह क्रम कुछ समय तक चलता रहा। वर्षा के कारण वातावरण में ठंड व्याप गई और पूज्यप्रवर का रात्रिशयन कक्ष में ही रखा गया।

ज्ञातव्य

१. समणी आदित्यप्रज्ञाजी (नाल) १३ मार्च २०२० को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के समणीगण से मुक्त हो गई हैं।
२. मुनि स्वस्तिककुमारजी (लाडनूं) १६ मार्च २०२० को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की साधु संस्था से मुक्त हो गए हैं।

क्रमशः

...

परम पूज्य आचार्यश्री हैदराबाद में

पर्युषण पर्वाधिराज का शुभारंभ

१५ अगस्त। भाद्रव कृष्णा एकादबअशी। पर्वाधिराज पर्युषण का शुभारंभ। चतुर्विध धर्मसंघ में आध्यात्मिक उल्लास का वातावरण। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष कार्यक्रमों का आयोजन संभव नहीं था, किन्तु द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के ज्ञाता परमपूज्य आचार्यप्रवर ने पर्युषण के प्रायः सभी उपक्रमों को यथावत समायोजित करने का निर्णय किया, जिससे दूर बैठे श्रद्धालुजन आधुनिक तकनीक के माध्यम से इस महान आध्यात्मिक पर्व का लाभ उठा पाए। पर्युषण पर्व के संदर्भ में आज से प्रातः करीब दस बजे से ग्यारह बजे तक पूज्यप्रवर के प्रवचन आदि का पारस चैनल पर सीधा प्रसारण प्रारंभ किया गया। इसके साथ यूट्यूब के तेरापंथ चैनल व फेसबुक के तेरापंथ पेज पर समय सारिणी के प्रायः सभी कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण प्रारंभ किया गया। हजारों-हजारों लोग अपने घरों आदि में बैठे-बैठे इन उपक्रमों से लाभान्वित हुए।

पर्युषण पर्वाधिराज का प्रथम दिन खाद्य संयम दिवस के रूप में समायोजित हुआ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में मुख्यनियोजिकाजी ने पर्युषण के महत्त्व पर प्रकाश डाला। साध्वी लावण्यप्रभाजी ने 'खाद्य संयम दिवस' के संदर्भ में गीत प्रस्तुत किया। साध्वीवर्याजी ने दस धर्मों के अन्तर्गत 'मुक्ति' पर आधारित गीत का संगान किया। मुख्यमुनिश्री का 'क्षांति-मुक्ति' पर प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में पर्युषण पर्व के संदर्भ में कहा--'जैन श्वेताम्बर परम्परा के धर्माराधना के महत्त्वपूर्ण समय 'पर्युषण पर्व' का प्रारंभ हुआ है। चतुर्मास में भाद्रव महीना ऐसा होता है, जो जैन शासन की दृष्टि से अध्यात्म की आराधना के संदर्भ में एक अति उपयोगी समय सामूहिक रूप में धर्माराधना का होता है। संवत्सरी सहित पर्युषण के आठ दिन निर्धारित हैं। नवमा दिन क्षमापना का भी इससे जुड़ा हुआ है। ये नौ दिन धर्माराधना के विशेषतया होते हैं। इन दिनों में प्रवचनों का क्रम भी विशेषतया चलता है।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का वर्णन प्रारंभ करने से पूर्व कहा--'जैन शासन में वर्तमान अवसर्पिणी के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। भगवान महावीर एक चैतन्य पुरुष थे। वे भी आत्मा थे और हम भी आत्मा हैं। संसार में अनन्त-अनन्त आत्माएं हैं।

दुनिया में दो प्रकार की विचारधाराएं रही हैं-आस्तिक, नास्तिक। आस्तिक विचारधारा 'अन्य जीव-अन्य शरीर' की विचारधारा है। नास्तिक विचारधारा में 'तज्जीव-तच्छरीर' की बात बताई गई है। यानी आस्तिक विचारधारा का यह मानना है कि आत्मा और शरीर अलग-अलग हैं और नास्तिक विचारधारा में शरीर व आत्मा को एक माना गया है। आस्तिक विचारधारा के अनुसार आत्मा शाश्वत है और शरीर नश्वर है। आत्मा के शाश्वत अस्तित्व में पुनर्जन्म-पूर्वजन्म की बात सिद्ध हो सकती है। आत्मवाद और पुनर्जन्मवाद के सिद्धान्त के साथ कर्मवाद का सिद्धान्त भी जुड़ा हुआ है। कर्मों के कारण आत्मा पुनर्जन्म को प्राप्त होती है। इस प्रकार ये तीनों सिद्धान्त परस्पर मिले हुए हैं।

हम सबकी आत्माओं ने आज तक अनन्त-अनन्त जन्म ग्रहण कर लिए हैं और अनन्त-अनन्त बार मृत्यु का वरण कर लिया है। इस जन्म-मरण की परम्परा का नाम है संसार। मोक्ष में जाने के बाद फिर आत्मा का जन्म नहीं होता, अवतार नहीं होता, क्योंकि मोक्ष में जा चुकी आत्मा के साथ कर्म नहीं होता। जिस आत्मा के साथ कर्म होता है, उसीका पुनर्जन्म हो सकता है। जिसके कर्म नहीं, उसका पुनर्जन्म नहीं होता। जब तक आत्मा मोक्ष में नहीं जाती, तब तक ही उसकी जन्म और मृत्यु की परम्परा चलती है।

आज पर्युषण पर्व के प्रारंभ का दिन है। हम पर्युषण पर्व के दिनों में भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा पर चर्चा करते हैं। आज मैं आत्मवाद, कर्मवाद और पुनर्जन्मवाद के परिप्रेक्ष्य में भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का वर्णन प्रारंभ करना चाहूंगा।

सिद्धि की प्राप्ति के लिए अनेक जन्मों तक साधना करनी पड़ सकती हैं। भगवान महावीर ने किस प्रकार अध्यात्म की साधना की, इसे बताने के लिए उनके सत्ताईस भवों पर प्रकाश डालना अपेक्षित है। उन सत्ताईस जन्मों के आलोक में हम जान सकेंगे कि किस प्रकार भगवान महावीर ने अध्यात्म की यात्रा की, कर्मों के कारण उनकी आत्मा कैसे पतन की ओर गई और साधना से कैसे उसने उत्थान भी कर लिया।'

पूज्यप्रवर ने 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के वर्णन प्रसंग के अन्तर्गत 'नयसार' भव का वर्णन प्रारंभ किया। इस दौरान आचार्यप्रवर ने विविध प्रेरणाएं भी प्रदान कीं। पूज्य प्रवर ने पर्युषण पर्वाधिराज के प्रथम दिन के निर्धारित विषय खाद्य संयम के महत्त्व को भी विवेचित किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'खाद्य संयम दिवस' के संदर्भ में स्वयं द्वारा नव रचित गीत का संगान भी किया। वह गीत इस प्रकार है--

भोजन संयम जीवन में उपहार है।
खाने में लोलुपता रखना खुद से खुद की हार है।।

कितना खाना, कब खाना, क्यों खाना शुभ्र विवेक हो।
चबा-चबा कर धीरे-धीरे खाने में मन एक हो।
अतिभोजन बन जाता तन पर भार है ।।१।।

अवमोदरिका तप आराधन खादन का शृंगार है।
स्वास्थ्य सुरक्षा में सहयोगी बनता स्वल्पाहार है।
कम खाना, गम खाना, नमना संरक्षक प्राकार है ।।२।।

निन्दा तथा प्रशंसा भोज्य द्रव्य की करना वर्ज्य है।
समता सहिष्णुता सेवन से चित्तविशुद्धि समर्ज्य है।
मोक्ष साधना हेतुभूत आहार है ।३।।

केवलज्ञान दिलाने वाला यह औदारिक गात्र है।
भवसागर को तरने खातिर पावन नौकामात्र है।
'महाश्रमण' प्रभुवर का वर आधार है ।।४।।

लय : आने वाले कल की .....

स्वतंत्रता दिवस पर मंगल संदेश : अनैतिकता की गुलामी से मुक्त बने भारत

संयोग से आज भारत का स्वतंत्रता दिवस भी था। आचार्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'आज पर्युषण के प्रारंभ के साथ १५ अगस्त का दिन भी आ गया है। आज भारत का स्वतंत्रता दिवस है। आदमी को स्वतंत्रता अच्छी लगती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कितना खपना पड़ता होगा। भारत एक ऐसा देश है, जिसके पास संपदाएं हैं। भारत के पास ग्रन्थ संपदा है। प्राकृत, संस्कृत आदि भाषाओं में कितने-कितने ग्रन्थ भारत के पास हैं। भारत के पास पंथ संपदा भी है, कितने-कितने धर्म सम्प्रदाय भारत में हैं। भारत में संत संपदा भी हैं। कितने संत अतीत में भारत में हुए हैं और कितने आज भी हैं। इस प्रकार भारत के पास ग्रन्थ संपदा, पंथ संपदा और संत संपदा है। इन संपदाओं की सुरक्षा रहे। ग्रन्थों से ज्ञान प्राप्त होता रहे, पंथों से प्रेरणा मिलती रहे और संतों से सन्मार्ग मिलता रहे तो भारत और आगे बढ़ सकता है।

देश के लिए भौतिक विकास आवश्यक हो सकता है और उसके लिए आर्थिक विकास भी आवश्यक हो सकता है, किन्तु देश वहीं तक सीमित न रहे। देश के विकास के लिए नैतिकता, शिक्षा और आध्यात्मिकता

का विकास भी होना चाहिए। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन की बात कही थी, अणुव्रत नैतिकता का संदेश देने वाला आंदोलन है। भारत के नागरिकों में नैतिकता के प्रति निष्ठा का विकास हो। परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी प्रेक्षाध्यान करवाते थे। प्रेक्षाध्यान जैसे उपक्रमों से देश के नागरिकों में आध्यात्मिकता का विकास हो। भारत आध्यात्मिक दृष्टि से आगे बढ़े। भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने किस प्रकार आत्मा का, सत्य का साक्षात्कार किया होगा। आज भी भारत में संत हैं। संतों की स्वयं की साधना आगे बढ़ती रहे और उनसे जनता को भी आध्यात्मिक मार्गदर्शन मिलता रहे।

भारत के नागरिक नैतिकता के प्रति निष्ठा रखें। नैतिकता में बल होता है और झूठ में कमजोरी होती है। नैतिकता के सामने परेशानी आ सकती है, किन्तु मेरा विश्वास है कि वह कभी परास्त नहीं होती। हम सभी में आध्यात्मिकता, नैतिकता की निष्ठा और ज्यादा पुष्ट हो। आध्यात्मिकता-नैतिकता जीवन में रहती है तो जीवन और ज्यादा अच्छा बन सकता है। स्वतंत्रता मिलना अभीष्ट हो सकता है, किन्तु अनैतिकता से भी आजादी पाने का प्रयत्न हो। ताला लगाया जाता है, इतनी नैतिकता हो जाए कि ताला लगाने की अपेक्षा ही न रहे। ऐसी नैतिकता आ जाए तो भारत स्वर्ग जैसा बन जाए। भारत अच्छा देश है, वह और ज्यादा अच्छा बने, हमारी मंगलकामना।'

गत रात्रि से जारी वर्षा आज दोपहर एक बजे के बाद ही थमी। इस कारण परमाराध्य आचार्यप्रवर का आहार करीब दो बजे के आसपास हुआ। कुछ समय बाद पुनः बारिस प्रारंभ हो गई, जो देर रात तक जारी थी, इस कारण सायंकालीन गोचरी नहीं हो पाई।

पर्युषण पर्वाधिराज : स्वाध्याय दिवस

१६ अगस्त। पर्वाधिराज पर्युषण का दूसरा दिन। स्वाध्याय दिवस का आयोजन। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान मुनि योगेशकुमारजी ने 'तीर्थ और तीर्थंकर' विषय पर अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। साध्वी शरदयशाजी ने स्वाध्याय दिवस के संदर्भ में गीत प्रस्तुत किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में स्वाध्याय के महत्त्व पर प्रकाश डाला। आज तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ अनुशास्ता परमपूज्य श्रीमज्जयाचार्य का महाप्रयाण दिवस भी था। मुख्यमुनिश्री ने गीत तथा साध्वीवर्याजी ने वक्तव्य के द्वारा श्रीमज्जयाचार्य के प्रति अपनी श्रद्धाप्रणति अर्पित की।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के वर्णन क्रम के अन्तर्गत 'मरीचि भव' का वर्णन प्रारंभ किया। आचार्यप्रवर ने 'स्वाध्याय दिवस' के उपलक्ष्य में स्वरचित नवीन गीत का संगान किया, वह इस प्रकार है--

जीवन बगिया को विकसाना है,
तन-मन को सरसाना है।
श्रुत का स्वाध्याय सदा सुखकार है।
ओ साधक! स्वाध्यायी नर पाता भव पार है।।

ज्ञान बोधि से मानव पाता पावन चरण पुंज को।
सम्यक्‌दर्शन युक्त चरित ले जाता मोक्ष कुंज को।
वाचन-प्रवचन हो तन्मयता से, पृच्छा हो तल्लयता से।
तार्किक मेधा हितकर तलवार है।। ओ साधक! .....

करें ज्ञान कण्ठस्थ विनययुत दत्तचित्त उसमें हो,
पुनरावर्तन समय-समय पर हो दिन या रजनी हो।

स्मृत की संरक्षा भी करना है, ज्ञानात्मक घट भरना है।
स्मरणस्थित आवर्तन प्राकार है।। ओ साधक! .....

घोष शुद्धि की बहुत महत्ता मानुष के भाषण में,
ह्रस्व, दीर्घ, संयुक्त स्पष्ट हो वार्ता-सम्भाषण में।
हीनाधिकता से सदा बचें हम, मिश्रण से दूर रहे हम।
उच्चारण शुद्धि वचन-शृंगार है।। ओ साधक! .....

आगम ग्रन्थ थोकड़े पढ-पढ तात्त्विक बोध वरें हम,
आग्रहमुक्त गहन चिन्तन से सात्त्विक शोध करें हम।
ज्ञानी ध्यानी बनना है हमको, त्यागी बनना है हमको।
बहुश्रुत की 'महाश्रमण' जयकार है।। ओ साधक! ....

लय : संन्ता! शासन ओ स्वामीजी रो .....

पूज्यप्रवर ने श्रीमज्जयाचार्य के महाप्रयाण दिवस के संदर्भ में कहा--'आज भाद्रव कृष्णा द्वादशी है। आज जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ अनुशास्ता श्रीमज्जयाचार्य का महाप्रयाण दिवस है। आज की तिथि में जयपुर में लालाजी की हवेली में श्रीमज्जयाचार्य ने अंतिम श्वास लिया था। रामनिवास बाग में स्थित उनके समाधि स्थल को मैंने 'साधना का प्रज्ञापीठ' कहा। श्रद्धालु लोग उस समाधिस्थल पर जाते भी होंगे। आज के दिन जयपुर में कार्यक्रम भी हुआ करता है। इस बार तो स्थिति कुछ भिन्न है।

स्थूल भाषा में कहें तो श्रीमज्जयाचार्य मानों भिक्षु स्वामी के अवतार थे। भिक्षु स्वामी का महाप्रयाण हुआ और करीब एक माह बाद श्रीमज्जयाचार्य का जन्म हुआ। मानों एक महापुरुष गया और दूसरा महापुरुष धरती पर आ गया।

श्रीमज्जयाचार्य आचार्य भिक्षु के साहित्य के मानों भाष्यकार थे। उनके पास कितना ज्ञान रहा होगा। वे एक महान साहित्यकार थे। कितना उनका साहित्य है। 'भगवती की जोड़' उनकी विशालकाय रचना है। भगवइ विवाहपण्णत्ती पर राग-रागिनियों में उनकी यह विशाल रचना उनके महान साहित्यकारत्व का द्योतक है। उनके पास कितना गहरा ज्ञान था। उनके 'झीणी चरचा', 'प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध', 'भ्रमविध्वंसन' आदि ग्रन्थ प्रकाशित हैं तो संदेह विषौषधि, जिनाज्ञा मुखमंडन आदि अप्रकाशित ग्रन्थ हैं।

संघीय व्यवस्था में उन्होंने नवीनता लाने का प्रयास किया, मानों हमारे तेरापंथ धर्मसंघ का नया संस्करण-सा तैयार हो गया। अगर तेरापंथ को एक ग्रन्थ माना जाए तो इसका पहला संस्करण परमपूज्य आचार्य भिक्षु के समय हुआ। दूसरी शताब्दी में श्रीमज्जयाचार्य थे तो मानों दूसरा संस्करण उनके समय आ गया। तेरापंथ ग्रन्थ में ओर नवीनता आ गई।

आज प्रातः परमाराध्य आचार्यप्रवर के मस्तक व मुखारविन्द का लुंचन हुआ। गत दिन के दोपहर से जारी वर्षा आज करीब नौ बजे के बाद भी चलती रही। वर्षा थमने के उपरान्त ही परम पूज्य आचार्यप्रवर ने आहार ग्रहण किया। इस प्रकार इन दिनों चौबीस घंटों में मात्र कुछ ही समय वर्षा थम रही है।

गत कल स्वतंत्रता दिवस और आज रविवार के कारण अवकाश का दिन था। इस कारण इन दो दिनों में श्रद्धालुओं का आवागमन कुछ ज्यादा रहा। आगन्तुक लोग निर्धारित समयों में पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगलपाठ से लाभान्वित हुए।

पर्युषण पर्वाधिराज : सामायिक दिवस

१७ अगस्त। पर्युषण पर्व का तीसरा दिन। सामायिक दिवस के रूप में समायोजित हुआ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में मुनि दीपकुमारजी ने प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ के जीवन चरित्र पर प्रस्तुति दी। मुनि अनेकान्तकुमारजी

ने सामायिक दिवस के संदर्भ में गीत का संगान किया। साध्वीवर्याजी ने दस धर्मों के अन्तर्गत 'आर्जव' पर गीत तथा मुख्यमुनिश्री का 'आर्जव-मार्दव' पर उद्‌बोधन हुआ।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' प्रसंग के अन्तर्गत आज मरीचिभव का वर्णन क्रम परिसम्पन्न कर 'त्रिपृष्ठ भव' के प्रारंभ तक के भवों का वर्णन किया। पूज्यप्रवर ने इस वर्णनक्रम के अन्तर्गत विविध प्रेरक सम्बोध भी प्रदान किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'सामायिक' के संदर्भ में स्वयं द्वारा रचित नवीन गीत का संगान किया, वह इस प्रकार है--

सुश्रावक! करलो सामायिक से सुविशद धर्म कमाई।
सुविशद धर्म कमाई, इससे मिलता सुख स्थाई हो।।

व्रत सवंर की पुष्ट साधना नवमें व्रत में होती।
शुभ योगों से कर्मनिर्जरा सामायिक में होती।
अड़चास मिनिट आराधना, सद्‌भावों की निष्पादना।
करणद्वय-योगत्रय प्रत्याख्यान प्रवर सुखदाई हो ।।१।।

सर्वविरति सामायिक जीवनभर जो संत पालते।
करणत्रय योगत्रय से पापात्मक कृत्य टालते।
उन साधुजनों को वन्दन है, उनका सविनय अभिनन्दन है।
धन्य-धन्य त्यागी मुनियों को जो शट्‌कायत्राई हो ।।२।।

खाली नहीं बैठना सामायिक में यह चिन्तन हो।
जप, स्वाध्याय, ध्यान तात्त्विक-चर्चा आगम मंथन हो।
शुभयोग नहीं सामायिक है, व्रत संवर वर सामायिक है।
सामायिक में शुभयोगों से बजती तप शहनाई हो ।।३।।

'महाश्रमण' जिन शासन में समता को धर्म कहा है।
रागद्वेषविमुक्तचित्तता सुख का मर्म रहा है।
सामायिक में कल्याण निहित, शुभ अनुष्ठान हितकर सुविहित।
वीर भिक्षु तुलसी गुरु महाप्रज्ञ वन्दन वरदाई हो ।।४।।

लय : स्वामीजी! थांरी साधना री मेरु-सी ऊंचाई .....

महाश्रमण वाटिका में 'कल्पतरु' इमारत, जिसमें परम पूज्य आचार्यप्रवर का प्रवास हो रहा है, का निर्माण कार्य अब सम्पन्नता की ओर है। आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के उपरान्त पूज्यप्रवर स्वयं के लिए निर्धारित कक्ष में पधारे। प्रवेश के बाद से पूज्यप्रवर का प्रवास किसी अन्य कक्ष में हो रहा था, जिसे बाद में मुख्यमुनिश्री के लिए निर्धारित किया गया। गत कल सायंकाल और आज प्रातःकाल मुनिवृन्द जिनका चातुर्मासिक प्रवास 'महाश्रमण वाटिका' में निर्धारित हैं और जो प्रवेश के बाद से 'कोटेजेज' में प्रवास कर रहे थे, का भी 'कल्पतरु' इमारत में प्रवास प्रारंभ हो गया।

आज भी सूर्योदय के पूर्व से ही वर्षा जारी थी, जो करीब दस बजे के आसपास थमी। तब तक पूज्यप्रवर का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पधारने का समय हो चुका था। पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम के उपरान्त ही आहार आदि ग्रहण किया। मध्याह्न में मौसम ने करवट ली। सूर्य ने अपनी किरणों के माध्यम से मानों कई दिनों बाद धरा का स्पर्श किया।

पर्युषण पर्वाधिराज : वाणी संयम दिवस

१८ अगस्त। पर्युषण पर्वाधिराज का चौथा दिन। वाणी संयम दिवस का आयोजन। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान मुनि नयकुमारजी ने सोहलवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ के जीवन चरित्र के संदर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वी कौशलप्रभाजी ने वाणी संयम दिवस के प्रसंग में गीत को प्रस्तुति दी। दस धर्मों के अन्तर्गत लाघव और सत्य धर्म पर साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ तथा मुख्यमुनिश्री ने सत्य धर्म पर गीत का संगान किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के अन्तर्गत 'त्रिपृष्ठ भव' का वर्णन सम्पन्न किया। पूज्यप्रवर ने वाणी संयम दिवस के संदर्भ में मितभाषिता, मिष्टभाषिता मधुरभाषिता और परीक्ष्यभाषिता का संबोध प्रदान किया। आचार्यप्रवर ने वाणी संयम के संदर्भ में स्वरचित नवीन गीत का संगान किया, वह इस प्रकार है--

संयम रखो मानव! वाणी का सदा।
वच-अविवेक का उत्पाद विपदा।।

मृषावचन के कारणों को जान लो।
शास्त्र के निर्देश को अपने में ढाल लो।
क्रोध लोभ भय हास्य त्याज्य सर्वदा।।१।।

'बहुयं मा य आलवे' आगम का उपदेश है।
सुविचारित बोलना धर्म का सन्देश है।
जल्पन सुकला है एक जीवन-सम्पदा।।२।।

कड़वी भाषा बोलने से कौन-सा है फायदा।
मिष्टभाषित का प्रयोग शिष्टजन कायदा।
कर्कश व्यवहार' पैदा करता आपदा।।३।।

कानों से बहुत सुनते आंखों से बहु देखते।
सारा श्रुत दृष्ट सन्त बाहर नहि फेंकते।
वचन विविक्ति नेमांसूनु सुखदा।।४।।

'व्यवहार' - बोलना

लय : सजग बनो बीती जा रही घड़ी .....

शुरु हुआ सामूहिक अर्हत वन्दना का उपक्रम

आज पक्खी थी। पाक्षिक प्रतिक्रमण के उपरान्त मुनिवृन्द पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। मुनिवृन्द ने पूज्यप्रवर को वन्दन कर सविधि क्षमायाचना की। आचार्यप्रवर ने संतों से खमतखामणा करते हुए सुखपृच्छा की तथा गत पक्खी से इस पक्खी तक की आलोचना भी प्रदान की। पूज्यप्रवर द्वारा आमंत्रित किए जाने पर कुछ संतों ने अपने-अपने सुझाव भी प्रस्तुत किए। उनमें से एक सुझाव था--'अर्हत् वन्दना के क्रम को सामूहिक रूप में पुनः प्रारंभ करने का। पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में कोविद-१९ के संदर्भ में निर्धारित सरकारी नियमों, सोश्यल डिस्टेन्स आदि दृष्टियों से चिन्तन करने के उपरान्त इस सुझाव को स्वीकार कर लिया। पूज्यप्रवर ने आगामी कल से पूर्व रात्रिक अर्हत् वन्दना का क्रम सामूहिक रूप में पुनः प्रारंभ करने का निर्णय किया। आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार सोश्यल डिस्टेंसिंग का पालना करते हुए संतों की दीक्षा क्रम से पंक्ति बनाई गई। पूज्यप्रवर ने संतों को प्रतिदिन अर्हत् वन्दना के दौरान यथासंभव इसी क्रम में बैठने का निर्देश प्रदान किया।

ज्ञातव्य है कि गत २२ मार्च को परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कोविद-१९ के संदर्भ में अर्हत वन्दना, प्रतिक्रमण आदि सामूहिक उपक्रमों को अपने-अपने साझ में ही करने का निर्देश प्रदान किया था। तब से यह उपक्रम सामूहिक रूप में समायोजित नहीं हो रहा था।

पर्युषण पर्वाधिराज : अणुव्रत चेतना दिवस

१९ अगस्त। पर्युषण पर्वाधिराज का पांचवा दिन। अणुव्रत चेतना दिवस का आयोजन। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान मुनि परमानन्दजी ने तीर्थंकर भगवान मल्लिनाथ के जीवन चरित्र के संदर्भ में अपनी प्रस्तुति दी। मुख्यमुनिश्री ने दस धर्मों के अन्तर्गत संयम के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा साध्वीवर्याजी ने 'संयम' विषय पर गीत का संगान किया। साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी और साध्वी तेजस्वीप्रभाजी ने अणुव्रत चेतना दिवस के संदर्भ में सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के वर्णन प्रसंग को आगे बढाते हुए राजर्षि नन्दनभव का वर्णन किया। पूज्यप्रवर ने अणुव्रत चेतना दिवस के संदर्भ में पावन पाथेय भी प्रदान किया। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'अणुव्रत' के संदर्भ में स्वरचित नवीन गीत के तीन पद्यों का संगान किया। आचार्यप्रवर द्वारा रचित सम्पूर्ण गीत इस प्रकार है--

मानव की जीवन शैली संयम से भावित हो।
निश्छलता, करुणा, मैत्री से मन आप्लावित हो।।

हो व्यवहार विनिर्मल नैतिकता से संयुत।
प्रामाणिकता वाणी में, पल-पल परिलक्षित हो।।१।।

हो घृणा नहीं मानव से मानव के चिन्तन में।
मानुष-मानस का कण-कण, सद्भाव प्रभावित हो।।२।।

मुख मंदिर का मदिरा से किंचित् भी स्पर्श न हो।
ना कभी नशा करना है, नर-नर संकल्पित हो।।३।।

अणुव्रत की 'महाश्रमण' वर सौरभ फैलाएं हम।
तुलसी गुरु कृपा सुरभि से जन-जन मन सुरभित हो।।४।।

लय : प्रभु पार्श्व देव चरणों में शत शत .....

गत कल किए गए निर्णयानुसार आज रात्रि करीब ७.३० बजे से पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में सामूहिक अर्हत् वन्दना का उपक्रम प्रारंभ हो गया। इस उपक्रम में गृहस्थों को सम्मिलित होने का निषेध रखा गया है। सोश्यल डिस्टेंसिंग का अनुपालन करते हुए बनाई गई संतों की पंक्ति पूज्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में शोभायमान हो रही थी। अनायास एक मनहर दृश्य उपस्थित हो रहा था।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, ३ पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता ७००००१
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com
ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला